श्रद्धासुमन खेजड़ली शहीदी दिवस पर विषेष कविता

बिश्नोई समाज री महाबलिदान वीर गाथा खेजड़ली री

शान्ति दूत बिश्नोइयां री,
वीर रक्त री ताती धारा।
बाँ रै हिवड़ै भारी चोट करी,
हुआ माणस माणस रा हत्यारा ।।1।।

जद नियम तोड़ पर्यावरण रा,
जद गुरु भक्तां पर वार कर्‌या हो।
खाली हाथाँ मिनखां पर दुष्टा नै,
कुल्हाड़ियाँ हूँ वार कर्‌यो हो ।।2।।

खेजड़ली री पावन–पुन्न भोम पर,
जुल्मी जुल्म करण नै आय खड़्या हा।
काटण खेजड़ी खेजड़ली में जद,
बै ले कुल्हाड़िया हाथाँ आय बड़्या हा ।।3।।

बे आपणै बच्यां ज्यूँ प्रेम कियो रूँखा नै,
अर हरदम मोकळो बाने दुलार दियो।
सुण सुण बाताँ बे रूँख बाढ़ण री,
बिष्नोइयाँ रो हिवड़ो चित्कार कियो ।।4।।

बे सगळा लियां कुल्हाड़ा हाथां मैं,
गिरधर भण्डारी रै हुकमां लाग्या।
माँ अमृतादेवी अर तीन बेटियाँ जागी,
साको सुण हगळा ही बिश्नोई जाग्या ।।5।।

जद काटण खेजड़ी भिड़्या बैरी,
खेजड़ली मैं म्हारा जवान अड़्या ऐड़ा ।
जिंया रामायण रा अंगद अर हनुमान हा,
ज्यूँ कुरूक्षेत्र रा भींव–अर्जून अड़्या जैड़ा ।।6।।

काया अर माया रो मोह छोड़,
आया सब राखण लाज रूँखा री।
सगळा रूँखा गै जाय चिमटग्या,
लाग्या वीर झट झालण जुल्मां री ।।7।।

सिर साँठै ही जे रूँख बचै,
गुरु नियम पालण मैं कटै गळा ।
बानै पग नहीं धरण दियो बिष्नोइये,
रक्षा रा आया हा जद दिन बिरला ।।8।।

औ जुगा जुगा रो धर्म आपणों,
बचावण नै आज डट्‌या सरसी ।
घूंटो पाहळ गो दिया गुरु जी,

रूँखा साँठै आज कट्या सरसी ।।9।।

आज सत जाँचै आय म्हारो,
अभी घड़ियाँ म्हारी बे जागी है।
गुरु जाम्भै जी रा बिश्नोइयाँ पर,
आज आँख दुष्टां री लागी है।।10।।

सिर कट जावै, पर म्हें हटां नहीं,
आज वीरां नै बा आण अडिकै है।
पीपासर सम्भराथल अर मुकाम री,
अर भारत माँ री शान अडिकै है ।।11।।

आज ऊद्धो कसो रूपो अर वरसिंह,
विल्हो रणधीर परमानन्द रो माण अडिकै हो।
गुरु जम्भेष्वर विष्णु धर्म रै रसियां रो,
बिश्नोइयाँ नै मोटो बलिदान अडिकै हो ।।12।।

पर्यावरण री पत अर लाज राखी बे,
समाज रो माण राक्ष्यो चोटी पर।
हा पक्का चेला गुरु जम्भेश्वर रा,
मिल अर जाय चढ़्या बे कसौटी पर ।।13।।

बे रूँख नहीं कोई कटण दिया,
जा सिर बे खेजड़ली में अंवार दिया।
सब जय बोलता विष्णु जी री,
आपणा बे कट कुहाड़ाँ प्राण दिया ।।14।।

जद तीन सैंकड़ा अर तिरेसठ,
बिश्नोई स्त्री–पुरूष कुर्बान हुआ।
देख बाँ वीरा बाक फाटगी कारिंदा री,
बे गेड़्या हथियार अर कूच हुआ ।।15।।

आ कुर्बानी सुण महाराजा अभय सिंह,
नंगे पाँव भाज्या आया अर माफी माँगी ।
म्हें रूँख अर जीवां री रक्षा करांला,
आं विचारां री लड़ी बाँ रै हिवड़ै जागी ।।16।।

भाद्धव सुदी दसमी बार मंगलवार हो,
जद जोधाणै रा हा सिंहासन डोल्या।
कर श्री गणैश चिपको आन्दोलण रो,
बणा धाम खेजड़ली नै, वीर प्राण छोड़ चल्या ।।17।।

खूब लड़्या बिश्नोई भारत माँ रा,
छोड़ जीवन र चार दिनां रै बासै नै।
खूब झूझ्या आपणा नावं अमर करग्या,
घणी पाळी बे बीर जीवण री आशा नै।।18।।

आज ओ सन्देशों मेरो बाँ वीरां नै,

अरे इसा बीर जण्यां बाँ मावाँ नै ।
समाज रै मोटा वीरां अर कवियाँ नै,
माँ–बहण कटी अर कटै बाँ भाइयाँ नै ।।19।।

युगां युगां सूँ जग मैं आ पहली घटना है,
कुर्बानी रो ओ इतिहास नहीं मिलै लो।
जद जद याद करो ला थै आ कुर्बानी,
थारी आँखा सूँ झर झर झरणों झड़ै लो ।।20।।

"पृथ्वीसिंह" मरणों तो सब नै होयसी,
पण ऐड़ी वीर री मौत कठै मिल सी ।
खेजड़ली मैं तन अर नाँव पूजी जै,
आ जम्भगुरु री जोत कठै मिल सी ।।21।।

पृथ्वीसिंह बैनीवाल बिश्नोई,
संस्थापक सदस्य, जाम्भाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर एवं संयुक्त सचिव एवं प्रैस प्रभारी,
श्री बिश्नोई सभा, पंचकूला, सैक्टर–15, पंचकूला–134113 (हरियाणा)–094676.94029